International Journal of Advanced Academic Studies 2021; 3(1): 387-388

E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(1): 387-388
Received: 14-11-2020
Accepted: 20-12-2020

डॉ. नीरव अडालजा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
डॉ. भीम राव अम्बेडकर कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. नीरव अडालजा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
डॉ. भीम राव अम्बेडकर कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

हिन्दी भाषा का भूमंडलीकरण

डॉ. नीरव अडालजा

प्रस्तावना

आज हिन्दी का भूमंडलीकरण हो गया है। भारत इक्कीसवीं सदी में एशिया की महाशक्ति बनेगा। केवल संख्याबल ही नहीं, जिस तीव्र गति से स्वतंत्रता के बाद विज्ञान, व्यापार तथा विविध क्षेत्रों में भारत ने विकास किया है उससे विविध विदेशी शक्तियाँ भारत में रुचि ले रही हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों का व्यापार के लिए बड़े पैमाने पर भारत में पूंजी निवेश, भारतीयों की विश्व के विविध देशों में पद–प्रतिष्ठा तथा विज्ञान व सामाजिक ज्ञान के क्षेत्र में निरंतर बनती बढ़ती सम्मानजनक स्थिति से विश्व पटल पर भारत एक नव–संसाधन सम्पन्न शक्तिशाली महादेश के रूप में उभरा है।

जब भी व्यक्ति या देश की छवि बनती है उस देश को तथा वहीं के निवासियों को समझने के लिए देश की भाषा व संस्कृति में भी सभी की रुचि बढ़ती है। भारत यों तो चिरकाल से कला, विज्ञान तथा अनेक क्षेत्रों में सम्पन्न होने के कारण विदेशियों के लिए आकर्षण का विषय रहा है और भारतीय विद्या में विदेशियों ने पर्याप्त रुचि भी ली है किन्तु इधर पिछले पाँच दशकों में भारत के प्रति विदेशियों की रुचि में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है और भारतीय साहित्य तथा भारतीय भाषाओं में भी उनकी रुचि अधिक बढ़ी है।

हिन्दी भारत की प्रधान भाषा है। भारत में हिन्दी को मातृभाषा के रूप में प्रयोग करने वाले भारतीयों का प्रतिशतक 1981 की भारतीय जनगणना के अनुसार 42.88 है। यदि द्वितीय भाषा तथा संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग करने वाले भारतीयों की संख्या भी हिन्दी भाषी संख्या में जोड़ दी जाए तो यह प्रतिशतक बहुत अधिक बढ़ जाता है। भारत के सुदूर पूर्व में रहने वाला सुदूर पश्चिम में बसे भारतीय से संपर्क मात्र हिन्दी के माध्यम से ही कर सकता है।

हिन्दी के संबंध में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि विश्व में हिन्दी भाषा का प्रयोग करने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि भी हो रही है।

आज विदेशी बहुराष्ट्रीय उपभोक्ता सामग्री उत्पादक कंपनियाँ भी हिन्दी के महत्त्व को समझते हुए अपने विज्ञापन में तो हिन्दी का प्रयोग बड़े पैमाने पर करती ही हैं, नियुक्ति के लिए हिन्दी तथा किसी एक अन्य भारतीय भाषा का ज्ञान अंग्रेज़ी की तुलना में अधिक आवश्यक मानती हैं। आज देश में किसी भी भाषा का साहित्यकार अपनी रचना को हिन्दी भाषा में प्रकाशित देखना चाहता है। वह या तो हिन्दी में लिखना चाहता है नहीं तो अपनी रचना का हिन्दी भाषा में अनुवाद कराना चाहता है। इसका कारण उसका हिन्दी प्रेम नहीं, हिन्दी की व्यावहारिक उपयोगिता है। हिन्दी ही उसे बड़ा तथा देशव्यापी पाठक वर्ग दे सकती है। हिन्दी फिल्मों की लोकप्रियता से आज कौन अपरिचित है। सभी भारतीय भाषाओं में बनने वाली फिल्मों के यदि वार्षिक आंकड़े देखे जाएं तो सभी भारतीय भाषाओं (हिन्दी को छोड़कर) में बनी फिल्मों की संपूर्ण संख्या भी हिन्दी फिल्मों की तुलना में नगण्य ही होती है। दूसरी भाषाओं के अभिनेता या अभिनेत्रियाँ हिन्दी फिल्मों में इसीलिए आना चाहते हैं जिससे उन्हें बड़ा दर्शक वर्ग मिल सके। यही स्थिति पत्रकारिता के क्षेत्र में भी है। हिन्दी में प्रकाशित दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक तथा मासिक पत्र–पत्रिकाओं की संख्या अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में बहुत अधिक है। हिन्दी की इसी व्यापकता के कारण आज हिन्दी को देश की प्रधान भाषा विश्व में माना जाने लगा है और विदेशी विद्वान हिन्दी का विविध कारणों से अध्ययन कर रहे हैं।

भारत के बाहर फीजी, मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद तथा दक्षिण अफ्रीका में बसे लाखों प्रवासी भारतीय जो आज से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व शर्तबंदी प्रथा के अंतर्गत इन देशों में गन्ने के खेतों में काम करने के लिए मजदूरों के रूप में भेजे गए थे और आज वहाँ के स्थायी नागरिक हैं, मातृभाषा के रूप में हिन्दी का ही व्यवहार करते हैं। ये प्रवासी भारतीय मूलतः पश्चिमी बिहार तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश से इन देशों में पहुँचे थे। इनकी भाषा प्रमुखतः भोजपुरी तथा अवधी थी इसलिए प्रवासी भारतीयों के बीच आपसी संपर्क का माध्यम ये ही भाषाएं बनीं। कालान्तर में यही हिन्दी इन प्रवासी भारतीयों की अस्मिता का प्रतीक बन गई। आज भी इन देशों में बसे प्रवासी भारतीय परिवार आपस में हिन्दी का ही व्यवहार करते हैं। वे हिन्दी का सम्मान करते हैं तथा हिन्दी का प्रचार–प्रसार करते हैं, क्योंकि वे मानते हैं कि हिन्दी ही समस्त भारतीयों को जोड़े रखने का एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक माध्यम है।

हिन्दी इन देशों में केवल भारतीयों के बीच ही नहीं, बल्कि इन देशों के मूल निवासियों के बीच भी अच्छी तरह समझी व बोली जाती है। फीजी में तो हिन्दी को संवैधानिक संसदीय मान्यता भी प्राप्त है और देश का कोई भी सांसद हिन्दी में अपने विचारों और भावों को अभिव्यक्त कर सकता है। वस्तुतः इन देशों में बसे हुए भारतीय मूल के उन लोगों की संख्या को भी हिन्दी भाषा भाषियों की संख्या में परिगणित करना चाहिए जो मातृभाषा के रूप में हिन्दी का व्यवहार करते हैं।

भारत के पड़ोसी देशों में पाकिस्तान, नेपाल, बंगलादेश व बर्मा में हिन्दी भाषा बोलने और समझने वालों की संख्या पर्याप्त है। पाकिस्तान की राजभाषा उर्दू तो भाषाविज्ञान की दृष्टि से खड़ी बोली प्रधान हिन्दी की शैली है। नेपाल में हिन्दी पूरे देश के 53 प्रतिशत नेपालियों की मातृभाषा है। इन देशों के अतिरिक्त भारतीय मूल के लोग अमेरिका, यूरोप, आस्ट्रेलिया या अफ्रीका – चाहे कहीं भी बसे हों हिन्दी बोलते और समझते हैं। वस्तुतः हिन्दी विदेशों में बसे भारतीयों के मध्य संपर्क भाषा के रूप में व्यवहृत होती है। वहाँ बसा भारतीय हिन्दी के माध्यम से अपने को भारत से जोड़ना चाहता है। प्रवासी भारतीयों की पहली तथा दूसरी पीढ़ी में हिन्दी मातृभाषा तथा तीसरी और चौथी पीढ़ी के बाद दूसरी भाषा बन जाती है। ये प्रवासी भारतीय, हिन्दी को उन देशों में भी सुरक्षित रखने के लिए प्रयत्नशील हैं। यहाँ भारतीय विद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है, हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है, रेडियो पर लंबी अवधि के हिन्दी प्रसारण होते हैं और इतना ही नहीं प्रवासी भारतीय हिन्दी में मौलिक साहित्य सृजन भी करते हैं।

भाषा की साामाजिक प्रतिष्ठा उसके बोलने वालों की सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ी होती है। भारतीय विश्व के अनेक देशों में सुशिक्षित, सुप्रतिष्ठित तथा सम्मानित नागरिक बन गए। उनकी उन्नत सामाजिक स्थिति के कारण ही उनकी भाषा भी सम्मानित भाषा बनी। प्रवासी भारतीयों का बड़ा दल सबसे पहले मॉरीशस, 1834 ई. में गया था, फिर 1845 ई. में त्रिनिदाद, 1860 ई. में दक्षिण अफ्रीका, 1870 ई. में ग्याना, 1873 ई. में सूरीनाम तथा 1879 ई. में फीजी समुद्री जहाज़ से पहुँचा था। इन देशों में जाने वाले भारतीय सामान्यतः अवधी तथा भोजपुरी बोलते थे। कुछ खड़ी बोली का भी प्रयोग करते थे। अन्य प्रदेशों से जाने वाले भारतीय संख्या में इतने कम थे कि उनके बीच पारस्परिक व्यवहार की संपर्क भाषा अवधी और भोजपुरी रही जिनमें कुछ अन्य भाषाओं के शब्दों का भी समुद्री यात्रा के दौरान समावेश हो गया। विदेशी भूमि पर कदम रखने के बाद यहाँ के मूल निवासियों तथा अंग्रेज़ अफसरों से जब उनका संपर्क हुआ तो वहाँ के कुछ शब्द भी उनकी हिन्दी में प्रायः तद्भव रूप में सम्मिलित हो गए। धीरे–धीरे उनकी शुद्ध भोजपुरी का रूप बदलने लगा और हिन्दी की एक नई विदेशी भाषिक शैली का विकास हुआ। इसी प्रकार अनेक नवीन भाषित शैलियां पनपीं जिनके नए नामकरण भी कर दिए गए क्योंकि वे भारत में बोली जाने वाली हिन्दी से बहुत मिलती थीं तथा इनमें स्थानीय भाषा का प्रभाव भी पर्याप्त दिखता था। फीजी में बोली जाने वाली हिन्दी को वहाँ के प्रवासी 'भारतीय फीजी' बात कहते हैं, सूरीनाम की हिन्दी को 'सरनामी हिन्दी या सरनामी' कहा जाता है तथा दक्षिण अफ्रीका की हिन्दी को नैताली। इन शैलियों का व्यवहार प्रवासी भारतीय अधिकांशतः घर में तथा औपचारिक बातचीत में करते हैं। इनमें साहित्यिक रचना बहुत कम होती है पर साहित्यिक रचनाओं में इनका प्रभाव निश्चय ही देखा जा सकता है। चूंकि इन नई भाषिक शैलियों में साहित्यिक लेखन बहुत कम होता है इसलिए इनका भाषिक स्वरूप वहाँ के हिन्दी लोकगीतों में तथा बोलचाल में ही देखने को मिलेगा।

विदेशी विद्वानों ने प्रवासी भारतीयों के मध्य प्रचलित हिन्दी की नई शैलियों के महत्त्व को समझा क्योंकि भारतीयों के निकट आने से उनसे घुलने मिलने का सबसे सहज तरीका उनकी अपनी भाषा को समझना तथा उस पर अधिकार प्राप्त कर लेना था। यही कारण है कि विदेशी विद्वानों ने प्रवासी भारतीयों द्वारा बोली जाने वाली हिन्दी की शैलियों पर विविध दृष्टियों से कार्य किया। इनका व्याकरण तैयार किया, हिन्दी–अंग्रेज़ी द्विभाषी कोश तैयार किए और इनके महत्त्व को आंका।

आज हिन्दी भाषा का अध्ययन और अध्यापन विश्व के लगभग सभी प्रमुख देशों में हो रहा है। कहीं यह अध्ययन प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर हो रहा है तो कहीं विश्वविद्यालय के स्तर पर। कहीं यह अपनी मातृभूमि भारत से जुड़े रहने का भावनात्मक माध्यम समझा जाता है तो कहीं इसके अध्ययन का उद्देश्य आधुनिक भारत के अंतर्तम को समझना है। विदेशों में हिन्दी शिक्षण कहीं निजी प्रयासों द्वारा तो कहीं धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं द्वारा तो कहीं सरकारी स्तर पर विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में संचालित हो रहा है। विश्व के विभिन्न उच्च अध्ययन संस्थानों में भी हिन्दी के अध्ययन, अध्यापन तथा अनुसंधान की व्यवस्था है। अमेरिका की डा. शोमर का कहना है कि अमेरिका में ही 113 विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में हिन्दी अध्ययन की सुविधाएं उपलब्ध हैं जिनमें से 13 तो शोध स्तर के केन्द्र बने हुए हैं। आंकड़े बताते हैं कि इस समय विश्व के 143 विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण की विविध स्तरों पर व्यवस्था है।

हिन्दी विश्व की उन महत्त्वपूर्ण भाषाओं में है जिनमें साहित्य सृजन न केवल भारत में वरन् विश्व के अनेक देशों में भारतीयों तथा विदेशियों द्वारा हो रहा है। निःसंदेह हिन्दी की विशिष्ट भाषिक शैलियां तो विदेश में विकसित हुई ही हैं आज कितने ही विदेशी धारा प्रवाह हिन्दी में लिख रहे हैं, उनकी हिन्दी रचनाएं उनके देश में तथा भारत में प्रकाशित होती हैं और सम्मान पाती हैं। कुछ रचनाएं तो भारतीय विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में स्थान प्राप्त कर हिन्दी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बना चुकी हैं।

स्पष्ट है कि अंतर्राष्ट्रीय पटल पर हिन्दी आज विश्व की एक प्रतिष्ठित भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त भाषा है जो अपने संख्या बल के आधार पर तो विश्व की दूसरी प्रमुख भाषा है ही, यह विश्व की एक ऐसी भाषा है जिसे विश्व के किसी भी देश में बसे हुए भारतीय, चाहे वे किसी भी भाषा के बोलने वाले मूलतः रहे हों, वे हिन्दी को अपनी अस्मिता से जुड़ा हुआ मानते हैं, वे उसकी सुरक्षा तथा प्रतिष्ठा के प्रति निरंतर सचेत हैं। विदेश में हिन्दी की कई भाषिक शैलियों का उन्होंने विकास किया है और उसमें वे अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। हिन्दी अध्ययन–अध्यापन की एक सुष्ठ परंपरा विदेश में रही है, हिन्दी पत्रकारिता का विदेश में निरंतर विकास हो रहा है, हिन्दी साहित्य के अध्ययन और अनुवाद के प्रति भी विदेशियों की रुचि बढ़ रही है। हिन्दी आज भारत की ही भाषा नहीं, यह विश्वभाषा का रूप ले चुकी है।

सहायक ग्रंथ सूची

1. भारत का भूमण्डलीकरण – (सं.) अभय कुमार दुबे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण–2007.
2. भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ – सच्चिदानंद सिन्हा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2007.
3. प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य – (सं.) विमलेशकांति वर्मा, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण–2016.
4. भूमंडलीकरण बाजार और हिंदी – सुधीश पचौरी, अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2004.
5. विश्व बाजार में हिंदी – महिपाल सिंह, देवेन्द्र मिश्र, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2008, नई दिल्ली।
6. भारतीय गंणतंत्र में हिंदी दशा और दिशा – नेहरु स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय, तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली।
7. हिंदी का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य – प्रो. प्रदीप श्रीधर, डॉ. शिखा श्रीधर, श्रुति बुक्स प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2017, गाजियाबाद।